☞ मिलनेका पता—बाबूराम शर्मा–इटावा।

* ओ३म् *

एक नवीन वेदान्ती व आर्यके मध्य

:प्रश्नोत्तर:

रचयिता—

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वतीजी

प्रकाशक

बाबूराम शर्म्मा इटावा।

चतुर्थवार २००० } सं० १९७० { मूल्य)। १) सैकड़ा

PRINTED BY B. D. S.

AT THE BRAHMA PRESS

ETAWAH.

॥ ओ३म् ॥

प्रश्नोत्तर

महाशयगण ! एक दिवस एक नवीन वेदान्ती और आर्य्यमें जीव ब्रह्मकी एकतापर प्रश्नोत्तर हुये जो सर्व जनोंके लाभार्थ अङ्कित किये जाते हैं जिससे वेदान्तके मूलसे सज्जनभिज्ञ होजावें (आर्य्य) क्यों महाशय जीवब्रह्ममें भेद है अथवा नहीं ? (वेदान्ती) अज्ञानी लोग तो भेद मानते हैं परन्तु ज्ञानियोंके विषय भेद नहीं (आर्य्य) महाशय ज्ञानी किसे कहते हैं ? (वे०) जिसे सत्यासत्यका विवेक हो (आ०) जब ब्रह्म एकही दूसरा कोई पदार्थ नहीं तो असत्य कोई पदार्थ नहीं फिर सत्यासत्यका विवेक कैसे होसकता है ? (वे०) भ्राता ! यह जगत् जो प्रतीत होता है यह असत्य है और ब्रह्मसत्य है एवम् सत्यासत्यका विवेक यही ज्ञानका स्वरूप है (आ०) महाशय ! जो जगत् प्रतीत होता है वह असत्य कैसे होसकता है (वे०) जो आदिमें न हो और अन्त में भी न रहे वह मध्यमें भी नहीं होता । जगत् क्योंकि उत्पत्तिसे पूर्व नहीं था और नाशान्तर नहीं रहेगा

अतएव वर्त्तमानमें भी असत्य है (आ०) क्या इस जगत् की उत्पत्तिसे प्रथम कभी जगत् था अथवा नहीं (वे०) जगत् न कभी प्रथम था न अब है और न आगे होगा केवल भ्रममें प्रतीत होता है जैसे रस्सीमें सांप अथवा सीपमें चांदीका भ्रम होजाता है (आ०) महाशय! जब सर्प एक सत्यपदार्थ है और रस्सी भी है तो रस्सी में सर्पका आभास अथवा भ्रम होता है जब कोई पदार्थ ही नहीं तो उसका भ्रमसे कैसे ज्ञान होसकता है (वे०) जैसे स्वप्नमें पदार्थाभाव पर भी ज्ञान होता है एवम् पदार्थोंके न होने पर भी ज्ञान हो सकता है (आ०) स्वप्नमें उन्हीं पदार्थोंका ज्ञान होता है जो जागृतदशा में दृष्टि परे हों (वे०) स्वप्नमें अपना मूड़ कटा हुआ देखते हैं जो जागृत में कभी नहीं देखा (आ०) जब किसीका सर कटा देखा है तभी सर कटेका ख्याल पैदा होता है और उस कल्पनाको अपने साथ मान लिया है (वे०) तमाम शास्त्रकारों का सिद्धान्त अर्थात् आखिरी फैसला अभेदवादमें है (आ०) न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा इत्यादि यह सारे ही भेदको प्रकट करते हैं (वे०) न्याय इत्यादि तो वेदके विरोधी हैं वेदान्तशास्त्र अर्थात् उपनिषदों और शारीरिक सूत्रसे तो स्पष्ट अभेदसिद्ध होता है वेदका तो सि-

दान्त ही अभेद है (आ०) वेदमें कहां लिखा है कि जीव ब्रह्मका अभेद है ? (वे०) सामवेदमें "तत्त्वमसि" महावाक्य मौजूद है (आ०) इसको महावाक्य किसने कहा है यह किसी आर्षग्रन्थका प्रमाण दिया है सामवेदका वचन तो नहीं यदि सामवेदमें है तो दिखलादो यह छान्दोग्य उपनिषद्का वाक्य है बतलाओ कि इसके अर्थसे किस प्रकार अभेद सिद्ध होता है (वे०) वेदान्तके ग्रन्थोंमें निश्चल दास इत्यादिने इसको महावाक्य लिखा है और छान्दोग्य उपनिषद् भी सामवेदही है और इसका अर्थ यह है "तत्" के अर्थ सो "त्वम्" "असि" अर्थात् सो ब्रह्म तू है (आ०) वाक्यके अर्थ तो यह होते हैं कि 'सो तू है, आप ब्रह्म कहांसे ले-आये हम कहते हैं सो जीव तू है (वे०) तत्शब्द पूर्व वाक्यके अर्थ आता है इससे प्रथम छान्दोग्य उपनिषद्में ब्रह्मका वर्णन है एवम् कहा कि वह ब्रह्म जिसका वर्णन होचुका है जीव तूही है (आ०) छान्दोग्य उपनिषद् में नौ स्थानोंमें यह शब्द आया है जिसकी दृष्टि से विदित होता है कि प्रथम जीवका विषय है और उद्यालकजीने अपने पुत्र श्वेतकेतुको जिसको शरीरमें आत्माका भ्रम था उसको शरीरसे पृथक् आत्मा

दिखानेके हेतु लिखे हैं (वे०) अजी तुम कुछ पढ़े लिखे हो नहीं व्यर्थ क्यों गप्प मारते हो छान्दोग्य- में इस वाक्य से प्रथम ब्रह्म ही का वर्णन है नहीं तो निश्चलदास पण्डित क्या झूंठ लिख सकता है ? (आ०) महाशय हाथ कङ्कन को आरसी क्या है ? आप छान्दोग्य निकाल कर देख लें आप को स्वयम् विदित हो जावेगा कि निश्चलदास इत्यादि ने सत्य लिखा अथवा झूंठ (वे०) देखो विचार सागर इत्या- दि में इस को महा वाक्य और तत् शब्द से ब्रह्म ही का ग्रहण है छान्दोग्य हमारे पास इस समय नहीं है नहीं तो अभी दिखला देते कि तुम्हारी सब कल्पना असत्य है (आ०) तुमने कभी सामवेद अथवा छा- न्दोग्य देखा भी है धर्म से कहना (वे०) कर्म तो भ्रम- जाल है हमने छान्दोग्य उपनिषद् तो देखा है प- रन्तु सामवेद को नहीं देखा (आ०) यदि तुमने छा- न्दोग्य उपनिषद् को देखा है तो उसके प्रथम का- पाठ स्मरण होगा बताओ इससे प्रथम किस विषयका वर्णन है (वे०) हमने छान्दोग्य उपनिषद्को देखा तो है परन्तु इस स्थल को नहीं विचारा (आ०) जब आपने यह प्रकरण विचारा नहीं तो किस प्रकार

कहा कि इस से प्रथम ब्रह्म का विषय वर्णन है यदि छान्दोग्य उपनिषद् होती तो निकालकर दिखला देते (वे०) क्या तुमने छान्दोग्य उपनिषद्का यह प्रकरण देखा है ? (आ०) हां देखा है (वे०) बताओ कैसा पाठ है (आ०)--

अस्य यदेका ꣳ शाखां जीवो जहात्यथ सा शुष्यति द्वितीयां जहात्यथ सा शुष्यति तृतीयां जहात्यथ सा शुष्यति सर्वं जहाति सर्वः शुष्यत्येवमेव खलु सोम्य विद्धीति हो वाच ॥ जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते न जीवो म्रियत इति स एषोऽणिमैतदात्म्य मिद ꣳ सर्वंतत्सत्य ꣳ स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो

अर्थ—जब इस शरीरके एक भाग को जीव त्याग देता है तब वह सूख जाता है जब द्वितीय भाग को त्यागता है तब वह शुष्क हो जाता है जब तृतीय भाग को त्यागता है तब वह शुष्क हो जाता है जब

सारे शरीर को त्यागता है तब सारा शरीर शुष्क हो जाता है उद्दालिक जी ने कहा इस प्रकार समझो (आ०) जीवके पृथक् हो जाने से शरीर मृत्यु को प्राप्त होता है जीव निश्चय नहीं मरता जब इस अंश को उद्दालिक मुनि कह चुके तब प्रश्न उत्पन्न हुआ कि वह जिस के त्यागने से यह शरीर शुष्क होकर मर जाता है वह कभी नहीं मरता वह क्या है तब उस के उत्तर में उद्दालिकमुनि ने कहा वह जो सूक्ष्म रूप है जिस का यह शरीर "आतिम्य" अर्थात् निवा सग्रह है और उस ग्रह का निवासक आत्मा है वह सत्य है और शरीर में व्यापक है और हे श्वेतकेतु वह आत्मा अर्थात जीव तू है शरीर नहीं है (वे०) तुम आत्मा शब्द से जीवात्मा का क्यों ग्रहण करते हो? (आ०) शरीर में व्यापक होने से वह आत्मा जीव है और जो जगत्में व्यापक है उसे परमात्मा कहते हैं (वे०) यहां जब कि आत्मा का विशेषण सत्य दिया गया तो फिर जीवात्मा कैसे हो सकता है क्योंकि जीव तो सत्य नहीं अविद्यारूप उपाधि से ज्ञात होता है (आ०) यह अविद्या क्या वस्तु है गुण है अथवा द्रव्य सत्य है अथवा असत्य (वे०) अविद्या

सत् असत् से पृथक् और अनिर्वचनीय अर्थात् जिसके विषय कुछ कथन नहीं कर सकते ऐसा पदार्थ है (आ०) क्या तुम्हारे इस अविद्याके होनेमें कोई प्रमाण है यदि प्रमाण है तो वह प्रमेय है अर्थात् एक २ पदार्थ अनिर्वचनीय किस प्रकार हो सकता यदि कोई प्रमाण नहीं तो उसके होनेका क्या प्रमाण है (वे०) हमारे मत में अविद्या वह वस्तु है जो ब्रह्म के एक देश में रहती है और उस को सत् असत् कुछ भी नहीं कह सकते (आ०) क्या ब्रह्म में अविद्या रहती है और ब्रह्म से पृथक् है अथवा ब्रह्म ही है (वे०) हम प्रथम ही कह चुके हैं कि वह अनिर्वचनीय है एवम् ब्रह्मसे पृथक् नहीं कह सकते क्योंकि इस दशा में द्वैत सिद्ध होता है जैसे जल में बुलबुला अथवा लहर उठती है क्या वह जल से पृथक् होती है हम तो इसे अनिर्वचनीय ही कहेंगे क्योंकि वह न तो जल से पृथक् है और न वह जल ही है (आ०) ऐसा कोई पदार्थ ही नहीं जो सत असतसे पृथक् हो अतएव तुम्हारी अविद्या का होना ही सिद्ध नहीं (वे०) हम तो वैशेषिककी भांति षट् पदार्थ वादी हैं और न न्यायकी भांति १६ पदार्थ मानते हैं एवम् तुम हमारी अविद्या का खण्डन नहीं कर सकते (आ०)

अनियतत्वेपिनऽयौक्तकस्यसंग्रहोऽन्यथावालोन्मत्तादिसमत्वम् ॥ सां० ॥सू०

अर्थ-चाहे तुम नियत पदार्थ न भी मानो तो भी अयुक्त पदार्थ को नहीं ले सकते यदि अयुक्त पदार्थों को गृहण करोगे तो तुम्हारे अविद्यालक और उन्मत्त कहने में क्या भेद होगा तब पागल की व्यर्थ बातों को ठीक मानना पड़ेगा (वे०) अजी यह सब बातें तो व्यवहार की हैं परमार्थ में यह सब मिथ्या हैं क्योंकि हम तो यह जानते हैं।

श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः । ब्रह्मसत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रम्हैव केवलः ॥

अर्थ-हम उस विषय को अर्ध श्लोकमें कहेंगे जिस को करोड़ों ग्रन्थोंमें कहा गया है वह विषय यह है कि ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है जीव केवल ब्रह्म है और कुछ नहीं (आ०) क्योंजी यह जगत् सर्वथा मिथ्या है (वे०) हां सचमुच मिथ्या है (आ०) तो तुम्हारा श्लोक सत्य है अथवा मिथ्या (वे०) यह भी मिथ्या है (आ०) तुम्हारा वचन सत्य है अथवा

मिथ्या (वे०) मिथ्या है (आ०) तो जगत् सत्य सिद्ध होगया क्योंकि जिस वाणी से आपने कहा वह जब मिथ्या हुई और जो श्लोक है वह मिथ्या है तो जिस को तुमने मिथ्या बाणीसे मिथ्या कहा वह सत्य सिद्ध होगया और जब जीवको कहना मिथ्या हुआ तो जीव ब्रह्म भी सत्य सिद्ध हो गया (वे०) जब तक अज्ञान है तब तक भेद है जब ज्ञान हो जाता है तो भेद स्वयम् ही दूर हो जाता है (आ०) ज्ञान किसे कहते हैं (वे०) भ्रमसे जो भेद ज्ञात होता है और अपने आप को जीव समझता है यह अज्ञान और जब स्वयम् ब्रह्म समझने लग जावेगा तो ज्ञान हो जावेगा जैसे एक शेरका बच्चा किसी गड़रियेके हाथ आगया और उसने उसे बकरियोंके साथ चराना आरम्भ किया वह शेर अपने आपको बकरी समझने लगा एक दिवस अन्य शेर आगया उसे देख कर बकरी भय भीत होकर भागने लगीं वह शेर भी उनके साथ भागने लगा तब शेरने देखा कि यह अज्ञान से अपनेको बकरी समझता है एवम् उसने उसका रूप पानीमें दिखला कर कहा कि तू बकरी नहीं शेर है तब उसका अज्ञान जाता रहा ऐसे ही जीव ब्रह्म है पर भ्रमसे जीव समझता है

(आ०) यह तुम्हारा दृष्टान्त सत्य है या मिथ्या (वे०) व्यवहार दशामें सत्य है और परमार्थ दशामें मिथ्या है (आ०) तुम्हारा यह व्यवहार और परमार्थ दशाका ज्ञान सत्य है अथवा मिथ्या (वे०) मिथ्या (आ०) एवम् तुम्हारा तो मिथ्या ज्ञान होगया और ज्ञानका भेद है अथवा अभेद (वे०) जिस प्रकार बहुतसे घड़ों में सूर्य्यका प्रतिबिम्ब ज्ञात होता है अज्ञानी तो यह समझते हैं कि बहुतसे सूर्य्य हैं और ज्ञानी समझता है कि सूर्य्य तो एक है उपाधिसे पृथक् २ ज्ञात होते हैं (आ०) तुम्हारी उपाधि सत्य है अथवा असत्य और ज्ञान का फल अभेद कैसे कह सकते हो क्योंकि ज्ञान तो सत्यको सत्य और असत्यको असत्य और सत्यासत्यमें भेद बतलाता है अन्धा जिसको रूप ज्ञान नहीं उसको सबका रूप अभेद है और आंख वालेको रूपमें भेद ज्ञात होता है (वे०) उपाधि व्यवहार दशामें सत्य और परमार्थमें मिथ्या है (आ०) तुम्हारे व्यवहार परमार्थ दशाका भेद ज्ञान है अथवा अज्ञान (वे०) ज्ञान है (आ०) तुम प्रथम कह चुके हो कि भेद अज्ञानका फल है अब तुम भेदको ज्ञान मानते हो (वे०) यह ऐसा विषय है जिसको कुछ कह नहीं स-

कते क्योंकि जो कुछ कहा जायगा वह जगत् में होगा और जगत् मिथ्या है अतएव ज्ञान अनुभवका विषय है (आ०) तुम कितने पदार्थ अनादि मानते हो (वे०) हम ६ पदार्थ अनादि मानते हैं (आ०) कौन ६ पदार्थ (वे०) जीव, ईश्वर, ब्रह्म, और उनका भेद और माया और उनका उनसे मिलाप यह ६ पदार्थ अनादि हैं (आ०) जीव किसे कहते हैं और ईश्वर किसे कहते हैं (वे०) शुद्ध सत्य प्रधान तो ईश्वर है और मलिन सत्य प्रधान जीव है अथवा माया उपाधि से युक्त चैतन्य को ईश्वर कहते हैं और अविद्या उपाधि युक्त चैतन्यको जीव कहते हैं (आ०) क्या अविद्या और चैतन्यका योग अनादि होसकता है क्योंकि योग क्रिया है जो बिना कालके हो नहीं सकती और जो कालकी सीमामें आगया वह अनादि कैसे हो सकता है और जो अनादि है वह नित्य भी होता है (वे०) यह सब अज्ञानकी बातें हैं हम ५ को अनादि सअन्त और एकको अनादि अनन्त मानते हैं (आ०) क्या तुमने कभी एक किनारे की नदी देखी है ? (वे०) नहीं देखी (आ०) तो अनादि सान्त कैसे हो सकता है क्योंकि जो पैदा होता है वही नाश होता है और

जो उत्पन्न नहीं होता वह नाश भी नहीं होता अत-एव जिसका आदि है उसका अन्त है जिसका आदि नहीं उसका अन्त नहीं क्योंकि इसमें दृष्टान्तका अभाव है (वे०) घट बनने से प्रथम जो घटका अभाव था उसका आदि तो है ही नहीं इस कारण अनादि है और घटके बनते ही नाश होजाता है अतएव अनादि भी सअन्त होता है (आ०) तुम्हारा यह कथन सर्वथा अयुक्त है क्योंकि घटकी उत्पत्तिसे प्रथम घट शब्द ही नहीं था तो उसका अर्थ किस प्रकार होसक्ता है यदि कहो कि घट शब्द था तो उसका प्राग् अभा-व कैसा यदि कहो नहीं था तो उसका अभाव बतलाने वाला न होनेसे सिद्धि नहीं और दृष्टान्त भाव पदार्थका होना चाहिये (वे०) सारे प्राचीन ग्रन्थों में ५ अनादि सान्त माने जाते हैं और एक अनादि अनन्त तो क्या यह अयुक्त है (अ०) यह अयुक्त तो नहीं तुमने इसके समझने में गड़बड़ डालदी है सुनो आदि और अन्त दो प्रकारसे होता है एक विस्तार भेदसे जिस प्रकार एक ग्रह एक सिरेसे आरम्भ होता है वह उसका आदि है और जिस सिरे पर समाप्त होता है वह उसका अन्त है द्वितीय वह ग्रह जिस दिवस बना है वह उसका आदि है और जिस दिवस नाश होगा वह उसका अन्त

है अतएव ६ पदार्थ काल से अनादी हैं अर्थात् उनकी उत्पत्ति नहीं और काल भेद से अनन्त भी हैं क्योंकि उनका नाश नहीं होता परन्तु ५ पदार्थ देश भेदसे अन्त वाले हैं और ब्रह्म देश व काल दोनों भेद से अनन्त और अनादि हैं (वे०) यह तुम्हारा कपोल कल्पित अर्थ है क्योंकि वह अनादि सान्त और अनादि अनन्त है तुम किस शब्दसे देश व काल ले आये (आ०) यह नियम है कि जहां वक्ता के कथन का अर्थ समझना असम्भव ज्ञात हो वहां लक्षणा की जाती है जैसे कोई मनुष्य रेल में बैठा हुआ कहता है कि लाहौर आ-गया किन्तु जाना आना करना लाहौरमें तो है नहीं यहां स्पष्ट अर्थ यह होता है कि हम लाहौर पहुंच गये इसी प्रकारके अधिक दृष्टान्त उपस्थित हैं क्योंकि एक किनारे की नदी अथवा अनादि का सान्त होना असम्भव है अतएव यह अर्थ ठीक है (वे०) जीव ब्रह्मको पृथक् मानने में दुःख ही दुःख है शान्ति कभी होती नहीं और श्रुति में लिखा है । द्वितियात्भयं भवति अर्थात् दूसरे से भय होता है (आ०) बेशक दूसरे से भय होता है परन्तु भयसे मनुष्य पाप से बचकर शा-न्ति पाजाता है और निर्भय मनुष्य पाप करके दुःख भागी होता है (वे०) यह पाप पुण्य का सब झगड़ा

झूंठा है जब यह सब झूंठा है तो क्यों भेद बुद्धि करके भयमें पड़ें (आ०) तो क्या यह भय और भेद बुद्धि सत्य है (वे०) नहीं सब मिथ्या है (आ०) तो मिथ्या के वास्ते सत्यको क्यों त्यागा जावे (वे०) तुम्हारी बुद्धिमें भ्रम पड़गया है जिससे तुमको जीव भाव का निश्चय होरहा है जब भ्रम दूर होजायगा तब अपने को ब्रह्म समझने लगेगा (आ०) क्या तुम्हारा यह कथन सत्य है (वे०) मिथ्या है (आ०) जब तुम्हारा कथन परमार्थ में मिथ्या है तो हमारी बुद्धि में भ्रम नहीं है जो मिथ्या बोलता है उसीकी बुद्धिमें भ्रम है (वे०) हम सब जगत्को आत्मा स्वरूप समझते हैं क्योंकि उससे शान्ति की प्राप्ति होती है (आ०) क्या तुम अचैतन्य पदार्थों को भी आत्मा समझते हो (वे०) यह चैतन्य वा अचैतन्य कहना केवल भ्रान्ति है किन्तु कोई चैतन्य और अचैतन्य नहीं केवल ब्रह्म है (आ०) तुम्हारे ब्रह्म का क्या स्वरूप अथवा लक्षण है ? (वे०) ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप है (आ०) सच्चिदानन्द किसे कहते हैं ? (वे०) सत् कहते हैं तीन कालमें रहने वालेको चित् कहते हैं ज्ञान वाले को आनन्द कहते हैं दुःख रहित को (आ०) तुम इतना क्यों कहते हो केवल सत् क्यों नहीं कहते हो क्योंकि ब्रह्म के अतिरिक्त

कोई पदार्थ सत् है ही नहीं (वे०) यद्यपि हमारे मत में ब्रह्म से पृथक् कोई पदार्थ नहीं परन्तु सांख्य वाले प्रकृति को न्याय वाले परमाणु को सत् मानते हैं अतएव प्रकृति से पृथक् करने के लिये चित् कहना पड़ा और न्याय वाले जीवात्मा को भी चैतन्य मानते हैं और सत् भी कहते हैं अतएव हमने आनन्द कहा बस अब प्रकृति और जीव से ब्रह्म पृथक् होगया और लक्षण पृथक् कर्त्ता को कहते हैं (आ०) तब लक्षणानुसार तो भेद जाता रहा अब तो जीव ब्रह्म और प्रकृति को पृथक् २ मान लिया (वे०) यह लक्षण आदि सब व्यवहार दशा में हैं परमार्थ में सब मिथ्या हैं और अज्ञान दशा में भेद हम भी मानते हैं (आ०) तुम्हारा यह कहना सत्य है या मिथ्या (वे०) मिथ्या है (आ०) बस मित्र जब तुम्हारी प्रत्येक बात मिथ्या है तो तुम्हारा अद्वैतवाद अर्थात् जीव ब्रह्म के एक होने का मामला किस प्रकार सत्य हो सकता है क्योंकि मिथ्या प्रमाणसे जो ज्ञान हो उसे कोई बुद्धिमान् सत्य नहीं मान सकता (वे०) अच्छा अब आज तो हम जाते हैं पुनः किसी दिन आकर तुमसे बात चीत करेंगे (आ०) मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने इतनी देर तक सत्यासत्यका निर्णय किया।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!